मध्यकालीन भारत की शिक्षा व्यवस्था

भूमिका

मानव सामाजिक प्राणी है। उसमें ज्ञान प्राप्त करने व ज्ञान की क्षुधा–तृप्त करने की असीम अभिलाषा रहती है। वह विविध विषयों का अध्ययन, उनकी मीमांसा, अन्वेशण, विश्लेशण करने में असीम आनन्द का अनुभव करता है। ज्ञान द्वारा वह अपने लोक–परलोक के ऐहिक, लौकिक व धार्मिक जीवन तथा अपने व्यक्तित्व को सुधारने की आकांक्षा रखता है। मध्यकाल में मुस्लिम समाज के शिक्षाविदों, धार्मिक व्यक्तियों, चिन्तकों व विचारकों का ध्यान शिक्षा की ओर गया। क्योंकि बिना अरबी भाशा के ज्ञान को प्राप्त किए आम मुसलमान न तो कुरान को पढ़ या याद कर सकते थे, न भाासन के नियमों को समझ सकता था और न मुहम्मद साहब द्वारा दिखाये गये मार्ग पर विधिवत् चल सकते थे। उसके जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्व था। इस काल में इस्लामी शिक्षा का सर्वांगीण विकास हुआ। शिक्षा का मुख्य आधार धर्म था।

सर्वप्रथम इस्लामी शिक्षा का लक्ष्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि करना था। मुहम्मद साहब के अनुसार ज्ञान प्राप्त करना एक कर्तव्य है और बिना उसकी मुक्ति नहीं मिल सकती। प्रत्येक मुसलमान पुरूष और स्त्री के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। मकतबों में बच्चों का प्रारम्भ से कुरान पढ़ायी जाती थी, जिससे उन्हें इस्लाम के मूल सिद्धांन्तों के विशय में जानकारी हो सके। मुहम्मद साहब के अनुसार शिक्षा से बढ़कर कोई दूसरा उपहार नहीं है, जो माता–पिता अपने बच्चे को दे सके। उनका कहना था कि विद्वान की स्याही भाहीद के रक्त से अधिक पवित्र है।

इस्लामी शिक्षा का दूसरा लक्ष्य इस्लाम का प्रसार करना था। जबकि तीसरा लक्ष्य इस्लामी सिद्धान्तों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था। और इसका चौथा लक्ष्य भौतिक सुख प्राप्त करना था। लेकिन इसका सबसे बड़ा दोष यह था कि यह लोगों को उच्च पद प्राप्त करने के लिए प्रलोभन देता था। यही कारण था कि मुस्लिम शासक विधार्थियों को प्रशासन में सिपहसलार काजी वजीर आदि पदों पर नियुक्त करते थे। बहुत से हिन्दुओं ने भी उच्च पद प्राप्त करने की लालसा में फारसी भाषा का अध्ययन किया और उन्हें ऊँचे पदों पर रखा गया।

मध्य युग में शैक्षणिक कार्य प्रणाली धर्माचार्यों और रहस्यवादियों द्वारा नियंत्रित की जाती थी। यही कारण था कि शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था। हजरत अब्दुल कुछूस गंगोही ज्ञानार्जन का लक्ष्य जीवन में अपने कर्तव्यों का पालन करना है। बिना ज्ञान के इस्लाम में वास्तविक आस्था नहीं हो सकती है। समस्त ज्ञान का लक्ष्य ईश्वर का प्रेम प्राप्त करना है।

भारत में तुर्की सत्ता की स्थापना के उपरान्त मुसलमान ने शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक प्रकार की संस्थाओं जैसे कि मकतब, मदरसे, खानकाहो की स्थापना की। मुसलमान परिवारों में शिशु की शिक्षा विस्मिल्लाखानी या मकतब संस्कार से प्रारम्भ होती थी। शिशु की आयु जब 4 वर्ष 4 माह 4 दिन की हो जाती थी तो उसके माता पिता बड़े धूमधाम से विस्मिल्लाखानी या अक्षर बोध का संस्कार मौलवी या काजी द्वारा सम्पन्न करवाते थे। उसके बाद सम्पन्न परिवारों में शिशु को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए शिक्षक नियुक्त किये जाते थे ।इन शिशुओं का ज्ञान वर्णमाला कुरान के पाठ, सुलेख व्याकरण आदि विषयों तक ही सीमित रहता था। इसके पश्चात् कुछ बड़े होने पर उन्हें साहित्य, इतिहास तथा नीतिशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। वे पदनामा, आमदनामाख मुलिस्ताँ, बोस्ताँ, हार ए–दानिश तथा सिकन्दरनामा

का अध्ययन करते थे। जो विधार्थी इसके उपरान्त शिक्षा ग्रहण करते थे उन्हें मौलाना मौलवी या फाजिल की पदवियाँ दी जाती थी। जो विधार्थी केवल अरबी की शिक्षा प्राप्त करते थे उन्हें कुरान के अतिरिक्त मुहम्मद साहब की जीवनी से सम्बन्धित ग्रन्थ, कुरान की टीकाएँ तसउफ्फ, दर्शन तथा अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता था।

इस काल में शिक्षा प्रणाली में शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। सम्पन्न परिवारों के घरों में बैठक में परिवार के आसपास के शिशु प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस बैठक को मकतब कहते थे। इस मकतब के शिक्षक के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व उस परिवार पर ही रहता था। जिन परिवारों के बच्चे वहाँ शिक्षा ग्रहन के लिए आते थे, वे भी उसकी आर्थिक सहायता करते थे।

शिक्षा का दूसरा केन्द्र मदरसा था। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता मिलती थी। ताजुल मआसिर के रचयिता हसन निजामी के अनुसार गौरी ने अजमेर में अनेक मदरसों की स्थापना की। भारत में यह मदरसे अपने ही ढंग के थे। लखनौती में मुहम्मद बिन बख्तियार खिल्जी ने अनेक मदरसो की स्थापना की इल्तुतमिश ने मुहम्मद गौरी के नाम पर दिल्ली में मुइज्जी मदरसे की स्थापना की। इसी नाम का एक मदरसा बदायूँ में स्थापित हुआ। रजिया ने नानासिरिया मदरसे की स्थापना दिल्ली में की व निनहाज को उसका आचार्य नियुक्त किया। कडा के कवि मुतहर ने अपनी दीवान में लिखा है कि फिरोज शाह ने अनेक मदरसों की स्थापना की उसके स्वंय दिल्ली के हौज–ए–खास के पास फिरोजशाही मदरसा देखकर उसका वर्णन किया। जलाउद्दीन रूमी इस मदरसे के प्रार्चाय थे। वे कुरान के 7 नियमों से पढ़ सकते थे तथा 14 विधाएँ जानते थे। हदीस के पाँच प्रसिद्ध संग्रहों का उन्हें ज्ञान था। यहीं के विधार्थियों को तफ्सीर, फिकह व हदीस पढ़ाया करते थे। सिकन्दर लोदी ने मथुरा व नखर में मदरसों की स्थापना की। इसी काल में उसने सम्भल में मदरसा स्थापित किया तथा वहाँ शेख अब्दुलाह को प्राचार्य नियुक्त किया। इसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में मुस्लमानों, अमीरों व शासकों ने उनके मदरसों की स्थापना की। शिक्षा के तृतीय महत्वपूर्ण केन्द्र सूफी सन्तों की खनकाह दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया की खनकाह सीदी मौला की खनकाह, शिक्षा के सुप्रसिद्ध केन्द्र थे।

इस काल के महान कवियों में अमीर खुसरो का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसकी पद्य में अनेक ऐतिहासिक रचनाएँ भी उपलब्ध है जैसे (1) केरान–उस–सादैन (2) मिफता उल–फुतह (3) देवल रानी व रिवज्र खाँ (4) नुहसिपेहर। उसने गद्य में (1) एजाज–ए–खुसखी (2) अफजल लफवायद (3) तथा खजा इन उल फुतूह की रचना की। अमीर खुसरो ने आठ वर्ष की आयु से कविता लिखना प्रांरम्भ किया। उसने तुर्की, फारसी, अरबी, तथा हिन्दवी का गहन अध्ययन किया तथा फारसी के सभी कवियों की रचनाओं का भी अध्ययन किया।

पूर्व मध्यकाल में इतिहास लेखन की सही परम्परा का विकास सल्तनत काल से होता है। इस काल के प्रसिद्ध इतिहासकारों में ताजूल मासीर का रचयिता हसन–निजामी तवकाते, नासिरी के लेखक मिनहाज उस सिराज, तारिख–ए–फिरोज शाही व फतवाए जहाँदारी के लेखक जियाउद्दीन बरना, फुतहउस सलातिन के लेखक एसामी, तारिख–ए–फिरोजशाही के लेखक अफीक तारिख–ए–मुबारकशाही के लेखक यहिया बिन अहमद सरहिन्दी, तारिख–ए–मुहम्मदी के लेखक मुहम्मद विहमन्द खान था।

सल्तनत काल की भाँति मुगलकाल में भी मुस्लिम शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि सन्तुलित आचरण, उत्तम व्यवहार व मानव के सभी गुणों का विकास करना था। मुगलकाल के शिक्षाविदों के विचार में इन उद्देश्यों की प्राप्ति केवल धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करके ही की जा सकती थी। मुगल सम्राट स्वयं शिक्षित थे अतः उन्होंने शिक्षा के प्रसार की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। अकबर महान प्रथम मुगल सम्राट थे जिसने शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के परिवर्तन किए कि धार्मिक एवं धर्म निरपेक्ष शिक्षा दोनों ही साथ–साथ दी जा सके।

पूर्वकाल की भाँति मुगलकाल में भी शिक्षा के वही केन्द्र थे। बाबरनामा एक अद्वितीय ग्रंथ है। वह कुछ नहीं कर सका। हुमायूँ के मकबरे में भी एक मदरसा खोला गया। वह स्वयं भूगोल, गणित व ज्योतिष में रूचि रखता था।

हुमायूँ की मृत्यु के बाद अकबर ने शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किया। यद्यपि वह पढ़ा–लिखा नहीं था, उसके बाद विद्वानों को प्रोत्साहन दिया। उसने अबूल फजल की सलाह से शिक्षा के विस्तार के लिए पाठ्यक्रम और नियमावली बनायी। उसने परम्परागत शिक्षा प्रणाली में सुधार किया और इस सम्बन्ध में राजकीय आदेश निकाले।

अकबर की शिक्षा नीति को उस समय के एक बड़े विद्वान शीराजी ने प्रभावित किया। वह अनेक विषयों का ज्ञाता था, उसने दर्शनशास्त्र और मकूलात में विशेष योग्यता प्राप्त की थी। तकनीकी शिक्षा के विकास में उसका वहुत योगदान था। उसने बड़ी बन्दूक और तोप बनाने में लोहे को पक्का करके उसका उपयोग किया। उसकी रूचि छोटे बालकों को पढ़ाने में थी। अबुल फजल का पुत्र उसका शिष्य था।

शिराजी ने कारखानों में अपना प्रयोग किया और उसके द्वारा कारखानों की उत्पादन क्षमता में विकास हुआ। जेसुइट पादरी मांसहेट ने इन कारखानों की प्रशंसा की है। अकबर ने तकनीकी शिक्षा के विकास में व्यक्तिगत रूचि दिखलाई। उसने आगरा, फतेहपुर सीकरी और अन्य स्थानों पर मदरसे बनवाये। उसने बहुत सी संस्कृत की पुस्तकों का अनुवाद फारसी भाषा में किया।

जहाँगीर स्वयं विद्वान होकर भी शिक्षा के प्रेमी नहीं थे। फिर भी उसने विद्वानों को प्रोत्साहन दिया। उसने चित्रकला के विकास में बहुत योगदान दिया। शाहजहाँ स्वयं तुर्की भाषा में पारंगत थे। उसके शासनकाल में एक प्रसिद्ध गणितज्ञ ने नक्षत्रों की एक तालिका बनाई और उलुगबेग द्वारा बनाई हुई पहले की तालिका में संशोधन किया। इसका नाम 'जिसे शाहजहाँनी रखा। शाहजहाँ ने विद्वानों को संरक्षण दिया। उसके कृपापात्र विद्वानों में चन्द्रमान ब्राह्मण प्रमुख थे जो एक उच्चकोटी के लेखक थे। उसकी लिखी हुई पुस्तक 'मेशाते ब्राह्मण पाठ्यक्रम में बहुत दिनों तक रही। शाहजहाँ ने जिन दूसरे विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। उनके नाम थे अब्दुल हकीम सियालकोटी, मुल्ला मुहम्मद काजिल और काजी मुहम्मद असलम। शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा बेगम ने आगरा की जामा मस्जिद से संलग्न एक मदरसा खोला जो बहुत समय तक प्रख्यात रहा। शाहजहाँ के पुत्र दारा एक विद्वान था। वह अरबी, फारसी और संस्कृत भाषाओं का ज्ञाता था। उसने उपनिषद, भगवदगीता, योग वाशिष्ठ का अनुवाद फारसी में किया। औरगजेब ने शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से शिक्षा प्रणाली में सुधार किया। उसने पाठ्यक्रम को व्यवहारिक बनाया बहुत, से मकतबों और मदरसों की स्थापना की और उनमें इस्लामी शिक्षा के प्रसार के लिए व्यवस्था की। उसने राज्य के ग्रन्थालय में बहुमूल्य पुस्तकों को रखवाया। यह पाठ्यक्रम में किसी ऐसी पुस्तक को नहीं रखना चाहता था जो उसके विचारों के प्रतिकूल है। उसके समय में शेख मुहीबुल्ला एलाहाबादी की पुस्तकें प्रचलित थी।

सल्तनत काल की भाँति मुगलकाल में मुसलमान समाज ने कभी भी स्त्रियों की शिक्षा की ओर ध्यान न दिया गया। स्त्रियों के लिए पर्दे में रहना अनिवार्य था। अतएव बाल्यावस्था में ही वे थोडी बहुत शिक्षा धर या मस्जिदों से संग्लन मकतबों में या व्यक्तिगत शिक्षिकाओं से ग्रहन कर सकती थी। मुस्लिम समाज में केवल शाही परिवार की स्त्रियों को छोड़कर अन्य वर्गों की बालिकाओं या स्त्रियों को शिक्षा देने का चलन न था।

मुगल राज परिवार में सुशिक्षित महिलाओं में केवल गुलबदन बेगम, सलीमा, सुल्तान, नूरजहाँ, मुमताजमहल, जहाँआरा, जीनत उन्निसा बेगम आदि थीं। इनमें से गुलबदन बेगम, सलीम सुल्तान, नूरजहाँ, मुमताज जेबुन्निसा के व्यक्तिगत पुस्तकालय थे। जिनमें विभिन्न विषयों पर पुस्तक थी। गुलबदन की कृति हुमायूँनामा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी

परन्तु साहित्यिक दृष्टि से यह कृति साधारण थी। परन्तु सलीमा सुल्तान, नूरजहाँ व जेबुन्निसा की रचनाएँ उच्च कोटि की थी।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद राजनीतिक अवस्था हो गई, जिससे मुगलों की केन्द्रीय सरकार शिक्षा के प्रसार के लिए कुछ नहीं कर सकी। औरंगजेब के बाद भारत में मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था की स्थिति चरमरा गई।

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव में मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था की ऐतिहासिक विश्लेषण करने का विनम्र प्रयास किया जाएगा।